2. Philosophy पुरुष (सांख्य दर्शन) Ph, Paper-VIII (UG Paper - I & VIII)

→ सांख्य दर्शन में आत्मा को पुरुष कहा गया है।

→ सांख्य के अनुसार पुरुष (आत्मा) विशुद्ध चैतन्य स्वरूप है, किन्तु वेदान्त की तरह यह आत्मा (पुरुष) को आनन्दस्वरूप नहीं मानता।

→ सांख्य प्रकृति और पुरुष के द्वैतवाद को, पुरुषबहुत्व को तथा अनिश्वरवादी वस्तुवाद को मानता है। प्रकृति अचेतन जगत का मूल कारण है जबकि पुरुष विशुद्ध चेतना है।

→ पुरुष की सत्ता स्वयंसिद्ध है, इसके अस्तित्व के खण्डन में ही इसकी सिद्धि हो जाती है। अर्थात जो खण्डन कर रहा है, वही चेतन आत्मा है।

→ पुरुष स्वयंप्रकाश है, चेतना उसका स्वरूप-लक्षण है। वह शरीर, मन, इन्द्रियों और बुद्धि से भिन्न है क्योंकि ये सभी प्रकृति के विकार हैं, भौतिक हैं जबकि पुरुष अभौतिक है। उसका न आदि है और न अन्त। अतः वह अमर है, नित्य है, मुक्त है, शुद्ध है, बुद्ध है।

→ पुरुष चेतनशील है पर निष्क्रिय है। वह अपरिवर्तनशील है। वह सदैव ज्ञाता है, वह ज्ञान का विषय नहीं बनता। पुरुष असंग और अविषय है। पुरुष ज्ञाता है जबकि प्रकृति ज्ञेय। पुरुष कूटस्थ नित्य है जबकि प्रकृति परिणामी नित्य।

→ पुरुष साक्षी चैतन्य है। वह उदासीन है, सुख-दुःख से प्रभावित नहीं होता। उसमें किसी प्रकार का विकार नहीं होता। वह अपरिणामी है, कूटस्थ है। वह स्वयंभू, सर्वव्यापी, अकृत और सनातन है। वह निर्गुण्य (सत्व-रजस-तमस से अलिप्त) है।

→ ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में पुरुष के अस्तित्व को सिद्ध करने के कुछ प्रमाण दिये हैं — 'संघात परार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ।
पुरुषोस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥

(i) संघातपरार्थत्वात् → त्रिगुणमयी प्रकृति और उसके समस्त कार्य-संघात जिसके साधन हैं, वह चेतन सत्ता पुरुष है। एक बिस्तर जो अनेक वस्तुओं के संघात से बना है, मनुष्य के सोने के लिये होता है, इसी तरह यह विश्व भी, जो पंचतत्त्वों से निर्मित है, किसी दूसरे के उपभोग के लिये है। पुरुष ही इस विश्व का भोक्ता है। अतः इस प्रमाण के अनुसार विश्व का आयोजन पुरुष के लिये हुआ है।

(ii) त्रिगुणादिविपर्ययात → संसार के सभी पदार्थ त्रिगुणात्मक हैं, जो गुणहीन पुरुष की ओर संकेत करता है।

(iii) अधिष्ठानात → ज्ञान एवं समस्त अनुभव के अधिष्ठान के रूप में पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है। अनुभवमूलक ज्ञान तभी संभव हो सकता है जबकि हमारे बिखरे हुये और असंबद्ध अनुभवों को समन्वित करनेवाला कोई तत्त्व हो और जो स्वयं अनुभव का विषय न होकर अनुभवातीत हो लेकिन जिसके बिना अनुभव संभव ही न हो।

(iv) त्रिगुणात्मक प्रकृति से जनित सुख-दुःख-मोहात्मक पदार्थों का भोक्ता चेतन पुरुष है (भोक्तृभावात्)

(v) कैवल्यार्थं प्रवृत्ते → मुमुक्षुत्व का प्रयत्न करनेवाला चेतन पुरुष ही है। कैवल्य जैसी उच्च आकांक्षा हमारे व्यक्तित्व के मूल में किसी चेतन तत्त्व की उपस्थिति को सिद्ध करता है।

पुरुष की सिद्धि के लिये उक्त सारे प्रमाण बुद्धि की उपाधि से → युक्त पुरुष की सत्ता सिद्ध करते हैं। यदि पुरुष को बुद्धि या प्रकृति से संयुक्त न माना जाय तो उसका अनुमान नहीं हो सकता। सांख्य के अनुसार भी प्रकृति अनुमापक नहीं है, प्रकृति का अनुमापक (लिंग) है न कि पुरुष का। इसी प्रकार अहंकार आदि अपने अपने कारणों का अनुमान करा सकते हैं, पुरुष का नहीं।

Scanned with CamScanner

→ पुरुष अनेक हैं, इसे सिद्ध करने के लिये ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में प्रमाण दिया है - 'जनन-मरण-करणानां प्रतिनियमादयुगपात्प्रवृत्तेश्च।
पुरुष-बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ॥'

(i, ii, iii) जनन-मरण-करणानां प्रतिनियमात् → पुरुष में जन्म, मरण और इन्द्रियों का भेद है। अतः पुरुष अनेक हैं।

(iv) अयुगपत् प्रवृत्तेश्च → विभिन्न पुरुषों में अन्तःकरण और कर्मेन्द्रियाँ अलग-अलग होती हैं, अतः पुरुष अनेक हैं।

(v) त्रैगुण्यविपर्ययात् चैव → विभिन्न बद्ध पुरुषों में त्रिगुणों का वितरण समान नहीं है, किसी में रजस् की तो किसी में तमस् की। अतः पुरुष अनेक हैं।

→ पुरुष की अनेकता की सिद्धि के लिये दिये गये उक्त युक्तियाँ उपाधि संयुक्त पुरुष पर ही लागू होती है। पुरुष, जो बन्धन मुक्त है एक ही हो सकता है। उसमें सांख्य की दृष्टि से अनेकता आ ही नहीं सकता क्योंकि उसका तत्व शुद्ध चेतना है। वह शुद्ध, बुद्ध और नित्य है और ऐसा पुरुष सभी बन्धनों से - सांख्य के बन्धन से भी - मुक्त होगा। यदि सभी पुरुष गुणातीत हैं, सर्वव्यापी हैं, यदि एक पुरुष दूसरे से भिन्न नहीं है, सभी शुद्ध चेतना हैं तो उसमें ~~अनेकत्व~~ अनेकता की कल्पना के लिये कुछ शेष ही नहीं बचता। बिना भेद और अन्तर के अनेकता असंभव है।

→ इस प्रकार सांख्य आध्यात्मिक और व्यावहारिक पुरुष में गड़बड़ी की है। एक ओर पुरुष को शुद्ध चैतन्य, निस्त्रैगुण्य, साक्षी, नित्यमुक्त, कैवल्यसिद्ध, निरपेक्ष आध्यात्मिक पुरुष के रूप में वर्णित किया है वहीं दूसरी ओर पुरुष के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये व्यावहारिक जीव का सहारा लिया है। ~~शुद्ध चै शुद्धचैतन्य~~

→ शुद्धचैतन्य आत्मा को शरीर के गुण और क्रियाओं के द्वारा कैसे समझाया जा सकता है। अनेकत्व प्रमाण बद्ध जीवों के सम्बन्ध में है, आध्यात्मिक पुरुष के सम्बन्ध में नहीं। अतः एक ही पुरुष का अस्तित्व है।

— Dr. S. K. Singh
Dept. of Philosophy
Mob. - 9431449951.

Scanned with CamScanner